आत्मा शांति मांग नही सकती
उसका स्वधर्म ही होता शांति
आत्मा है शान्तिधाम की रहवासी
योगबल से हम पवित्र दुनिया बनाते
5 तत्वों को भी सतोप्रधान बनाते
तब फिर शरीर भी सतोप्रधान वहां पाते
वहां फल भी बड़े- बड़े स्वादिष्ट होते
अपना जीवन हीरे जैसा बनाना
मात-पिता और अनन्य भाई- बहिन को फॉलो करना
कर्मातीत अवस्था के लिए देह -सहित सबकों भूलना
अपनी याद अडोल और स्थाई बनानी
देवता समान निर्लोभी, निर्मोही ,निर्विकारी बनना
विकारी साँपों पर विजय पाना
 विष्णु सामान शैया पर आराम से निश्चित हो रहना
बालक और मालिकपन का बैलेंस प्रैक्टिकल में लाना

ॐ शांति!!!
मेरा बाबा!!!